जवाहर नवोदय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालयों की संगठनात्मक वातावरण की भिन्नता का विधार्थियों पर प्रभाव का अध्ययन

Ashok Kumar Sharma[1]* Dr. Abhishek Kulshrestha[2]

[1] Research Scholar, Singhania University, Churu, Rajasthan

[2] Lecturer, Babu Shivnath Agrawal College, Mathura, Uttar Pradesh

***सारांश –** विद्यार्थी का व्यतित्व उसका समग्र रूप में प्रतिबिम्ब है जबकि उसकी अध्ययनक्षमता, अध्ययन रूचियों व अध्ययन के तौर तरीकों को दर्शाती है। इन अध्ययन आदतों पर विद्यालय के शिक्षकों द्वारा प्रयुक्त अध्ययन विधियों, पाठ्यक्रम, सहायक सामग्री के प्रयोग, अन्तःक्रिया आदि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। विद्यालय के संगठनात्मक वातावरण के अनुरूप ही विद्यार्थियों में उचित या अनुचित प्रकार की अध्ययन संबंधी विभिन्न आदतें परिलक्षित होती हैं।*

---------------------------------x---------------------------------

प्रस्तावना

वर्तमान के शैक्षिक युग में विद्यालयों का महत्व बहुत बढ़ गया है। भारत में प्र जातंत्र की स्थापना, धर्म की निरपेक्षता, संवैधानिक व्यवस्थाओं तथा आर्थिक एवं ओद्यौगिक आवश्यकताओं ने विद्यालय के महत्व को और भी अधिक बढ़ा दिया है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भारत में कई प्रकार के विद्यालय की स्थापना की गई है।

विद्यालय एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा विद्यार्थी का सर्वांगीण विकास होता है। विद्यालय वातावरण श्रेष्ठ होगा तो उसके द्वारा दी जाने वाली शिक्षा उत्तम होगी और बालक में अच्छे गुणों, आदतों तथा कौशलों का विकास होगा।

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसकी सोच एवं क्रियाएँ उस समाज एवं वातावरण पर निर्भर करती है जिसमें वह रहता है उसी वातावरण के अनुरूप उसके लक्ष्य (आकांक्षा), प्रयास एवं सफलताएं निर्भर करती है। बचपन में जब तक व्यक्ति अपनी योग्यता, रूचियों और मूल्यों को नहीं पहचानता है तब तक उसकी आकाक्षाएं, मुख्यतः वातावरण पर निर्भर करती है।

वातावरण सम्बन्धी कारकों में अभिभावकों की महत्वाकांक्षाएं, मित्र समूह, संस्कृति प्रतिस्पर्धा आदि मुख्य हैं। जैसे-जैसे बच्चा बड़ा होता है व्यक्तिगत कारक जैसे - गतअनुभव, उसका व्यक्तित्व, रूचियाँ, इच्छाएँ, लिंग और सामाजिक आर्थिक स्तर भी आकांक्षा के निर्धारण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है। हालांकि यह व्यक्तिगत कारक भी वातावरण द्वारा प्रभावित होते है।

अध्ययन कि आवश्यकता एवं महत्व:

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) में शै क्षिक विषमताओं को दूर करने तथा शिक्षा के समान अवसरों से वंचित बालकों की विशिष्ट आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन्हें शिक्षा के समान अवसर उपलब्ध कराने पर बल दिया गया है इसी उद्देश्य से राष्ट्रीय शिक्षा नीति में गति संवर्धक विद्यालय (पेस-सेटिंग स्कूल) स्थापित करने का संकल्प किया गया है। इसी क्रम में जवाहर नवोदय विद्यालयों की स्थापना की गई है। इन विद्यालयों में छात्रों के सम्पूर्ण विकास को ध्यान में रखते हुए उत्तम, आधुनिक एवं गुणात्मक शिक्षा उपलब्ध कराना, प्रवास नीति के जरिए राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना एवं लोकतंत्र, समाजवाद, धर्मनिरपेक्षता, अवसर में समानता आदि राष्ट्रीय उद्देश्यों की उपयुक्त शिक्षा व्यवस्था द्वारा पूर्ति करने का प्रयास किया जाता है। इन विद्यालयों का अपना विशिष्ट संगठनात्मक स्वरूप है। इनका संचालन केन्द्रीय

www.ignited.in

सरकार द्वारा स्थापित जवाहर नवोदय विद्यालय समिति करती है। नवोदय विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रों के आवास, भोजन, कपडा, दैनिक उपयोग की वस्तुओं पर आने वाले खर्च एवं घर आने-जाने के किराये (वर्ष में दो बार) पर होने वाले व्यय को भी सरकार ही वहन करती है। इन विद्यालयों में नवाचार अपनाने की और नवीन प्रयोग करने की छूट दी गई है। इन विद्यालयों को अन्य विद्यालयों के लिए आदर्श रूप में माना गया है।

जवाहर नवोदय विद्यालय

जवाहर नवोदय विद्यालय का तात्पर्य है जिनका नवीन उदय हुआ हो। ये वे विद्यालय है जिनकी स्थापना कमजोर वर्ग के प्रतिभाशाली बालकों के लिये हुयी है और उनका लक्ष्य उन सुप्त एवं अज्ञात प्रतिभाओं को खोजकर विकसित करना है जो कि अभावों के कारण समय के साथ आगे न आकर विलुप्त हो जाती है। ये उन क्षेत्रों के लिये है जो कि आर्थिक रूप से पिछड़े हुये है और जहाँ तक अभी माध्यमिक शिक्षा का प्रचार-प्रसार भी नहीं हुआ है। इन प्रतिभाओं को दिशा निर्देशन और उन्हें गति प्रदान करने के लिये इन विद्यालयों की स्थापना की गयी है अन्तः इन्हें 'गति निर्धारण' विद्यालयों के नाम से पुकारा जाता है। इन विद्यालयों की संकल्पना राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) की देन है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के उद्देश्यों को व्यावहारिक दृष्टिकोण प्रदान करने हेतु नवम्बर, सन् 1983 में योजना कार्या न्वयन नाम से अभिलेख प्रकाशित किया गया जिसके तृतीय खण्ड में नवोदय विद्यालय के रूप में संकल्पना की गयी और उनको व्यावहारिक रूप प्रदान किया।

नवोदय विद्यालयों की स्थापना जिन उद्देश्यों को पूरा करने हेतु की गई है वह एक प्रभावी और सुव्यवस्थित संरचनात्मक ढ़ाँचे के द्वारा ही संभव है इसलिए इसकी संगठनात्मक संरचना कैसी है इस पर दृष्टिपात करना आवश्यक हो जाता है।

नवोदय विद्यालय समिति मानव संसाधन विकास मंत्रालय के अन्तर्गत एक स्वायतत संस्था है जिसे समिति पंजीकरण अधिनियम (1860-XXI) के अन्तर्गत दिनाँक 28.02.1986 को दिल्ली में पंजीकृत किया गया है।

नवोदय विद्यालय का संचालन नवोदय विद्यालय समिति द्वारा किया जाता है। मानव संसाधन विकास मंत्री इस समिति के अध्यक्ष होते है। शिक्षा राज्य मंत्री अध्यक्ष होते हैं इसके अतिरिक्त 18 अन्य सदस्य होते हैं जो विभिन्न क्षेत्रों और विभागों से सम्बन्धित होते है।

नवोदय विद्यालय समिति एक कार्य कारिणी समिति के माध्यम से कार्य करती है। यह कार्य कारिणी समिति नवोदय विद्यालय समिति के विधिज्ञापन में निर्धारित उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास करती हैं तथा समिति के विभिन्न मामलों और निधियों के प्रबन्ध के लिए उत्तरदायी होती हैं। इस कार्य कारिणी समिति को नवोदय विद्यालय समिति की सभी शक्तियों के प्रयोग का अधिकार प्राप्त है। नवोदय विद्यालय समिति के जो सदस्य हैं वही इस कार्यकारिणी समिति के भी सदस्य होते हैं।

अनुदानित

उत्तर प्रदेश राज्य का निर्माण सन् 1949 में तत्कालीन देशी रियासतों के विलयीकरण से हुआ। प्रारंभ में विभिन्न देशी रियासतों के शैक्षिक प्रशासन एवं विस्तार की स्थितियों में एक रूपता लाने में राज्य सरकार द्वारा विशेष प्रयास किए गए। 1952 में मुदालियर कमीशन की अनुशंसाओं के अनुसार राज्य सरकार ने स्वीकृत शिक्षा संरचनाओं में परिवर्तन किए, इन्टर-मीडियट कॉलेजों के स्थान पर 1957 में हायर सैकेण्ड्री शिक्षा पद्धति प्रारंभ हुई। कक्षा 9 से विशेष संकायों की व्यवस्था की गई। 1965-66 में शिक्षा आयोग की अभिशंसाओं के अनुसार राज्य सरकार ने नवाचार के द्वार खोल दिए, जिससे विद्यालय संकुल, उद्देश्यनिष्ठ व्यापक मूल्यांकन, पाठ्यक्रम का पुनःनिर्धारण, पाठ्यक्रम का पुनः प्रकाशन, शिक्षाधिकारी के कार्य सरल एवं उद्देश्यनिष्ठ बनाने, अस्पष्ट एवं जटिल नियमों के सरलीकरण एवं पारदर्शिता लाने की प्रक्रिया पारम्भ हुई। इसके पश्चात् समय-समय पर विभाग को गतिशील एवं संवेदनशील बनाने के लिए संरचनात्मक ढ़ाँचे में अनेक परिवर्तन होते रहे।

विधालय संगठन

औपचारिक शिक्षा प्रदान करने का साधन (विद्यालय के संगठन) से तात्पर्य है, बालकों के सर्वांगीण विकास से सम्बन्धित सभी उपलबध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों की समुचित व्यवस्था एवं नये सामंजस्य स्थापित करना तथा आवश्यक साधनों की प्राप्ति हेतु प्रयास करना।

विधालय का संगठनात्म वातावरण:

विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण से तात्पर्य इसके सदस्यों के सामान्य व्यवहार तथा अनुभव से है और प्रधानाध्यापक, अध्यापक एवं अध्यापकों के बीच पारस्परिक सामाजिक अन्तःक्रिया का परिणाम है।

Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 5, April-2019, ISSN 2230-7540

विधालय वातावरण के प्रकार – डॉ. मोतीलाल शर्मा ने विधालय वातावरण के निम्नलिखित प्रकार बताये हैं–

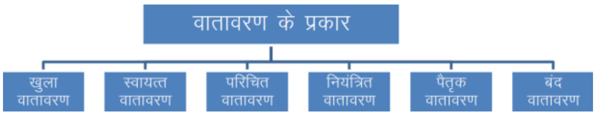

1. खुला वातावरण

यह खुला वातावरण उससे सम्बन्धित है जिसमें अध्यापक सामाजिक आवश्यकता की पूर्ति के साथ-साथ कार्य सन्तुष्टि को अंकित करता है और वे अपने कार्य में प्रसन्न्ता का अनुभव करते है। वे अपने प्राचार्य को एक नेता एवं बहुत ध्यान रखने वाले के रूप में देखते है और उनका व्यवहार प्रजातांत्रिक है। इस तरह से परिणामस्वरूप उस समूह के सदस्य प्राचार्य के साथ शान्ति का अनुभव करते है। इस प्रकार उस समूह में उच्च स्तरीय एकता एवं उनके व्यवहार में ठहराव है।

2. स्वायत्त वातावरण

उस वातावरण से सम्बन्धित है जिसमें अध्यापक मित्रतापूर्ण सम्बन्ध का आनन्द लेते है और समूह नैतिकता पाई जाती है। वे सामान्य रूप से अपनी सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि करते है और व कार्य सन्तुष्टि का आनन्द लेते है। वे प्राचार्य के सक्रिय नेतृत्व का अभाव एवं सामान्य नियंत्रण को मनो-शारीरिक बाधा के रूप में देखते है।

3. परिचित वातावरण

परिचित वातावरण यह लक्षण है कि इसमें प्राचार्य एवं अध्यापक दोनों में स्पष्ट रूप से मित्रतापूर्वक व्यवहार पाया जाता है।

अध्यापकों में व्यक्तिगत मित्रता पाई जाती है। सामाजिक रूप से प्र त्येक अध्यापक एक बड़े खुशनुमा परिवार के सदस्य के रूप में होता है। सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि उच्च होती है। प्राचार्य अप्रत्यक्ष रूप से नेतृत्वपूर्ण व्यवहार करता है और उत्पादन सन्तोषजनक बनाए रखता है। उसका व्यवहार कार्या भिमुख होता है लेकिन वह अध्यापकों की सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधक नहीं बनता।

4. नियंत्रित वातावरण

नियंत्रित वातावरण ऐसा वातावरण है जो कि अध्यापकों की सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि की कीमत पर उच्च रूप से कार्याभिमुख है। नेतृत्व तानाशाह प्रकार का होता है। समूहवाद को बढ़ावा नहीं दिया जाता। व्यक्ति के मानवीय पक्ष को महत्व नहीं दिया जात और एक तरफ ही सम्प्रेषण होता है । कार्य निष्पादन के आधार पर अध्यापक कार्य-सन्तुष्टि प्राप्त करते है।

5. पैतृक वातावरण

पैतृक वातावरण वह स्थिति प्रदर्शित करता है जिसमें कि अध्यापकों को अपनी सामाजिक आवश्यकतओं की पूर्ति और कार्य सन्तुष्टि के बहुत कम अवसर प्राप्त होते है। अध्यापकों को प्राचार्य के चाहे गए अनुसार कार्य करना पड़ता है परन्तु प्राचार्य अपने अधिनस्थ अध्यापकों के प्रति पैतृक भाव रखते हुए उनके व्यक्तिगत हितों पर भी ध्यान देता है और इस तरफ उसका व्यवहार उच्च रूप से विचारशक्ति दूसरों का ध्यान रखने वाला होता है।

6. बंद वातावरण

बंद वातावरण का यह लक्षण है कि इसमें संगठन के सभी सदस्यों में उच्च उदासीनता पाई जाती हैं संगठन में गति नहीं होती। इस प्रकार के वातावरण में व्यवहार में प्रमाणिकता नहीं पायी जाती। प्राचार्य समूह में से नेतृत्व भावना को उभरने नहीं देता। समूह के सदस्य की न तो सामाजिक आवश्यकताओं की सन्तुष्टि होती न ही कार्य सन्तुष्टि।

शोध अध्ययन के उद्देश्य:-

किसी भी कार्य को करने से पूर्व उसकों करने का कारण निर्धारण करना ही उस कार्य का उद्देश्य कहलाता है। बिना उद् देश्यों को निर्धा रित किये कार्य को समुचित या सुचारू रूप से आगे बढ़ाना असम्भव हो जाता है। प्रस्तुत शोध के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. जवाहर नवोदय विद्यालयों तथा अनुदानित विद्यालयों की विभिन्न संगठनात्मक वातावरण में अध्ययनरत् विद्यार्थियों के आकांक्षा स्तर का तुलनात्मक अध्ययन करना।

विभिन्न विद्यालयों के संगठनात्मक वातावरण की विमाओं के नॉरमटिव

विद्यालय का नाम	संगठनात्मक वातावरण की विमा									
	असंलग्नता	अलगाव	संघभाव	निकटता	मनो–शारीरिक बाधा	नियन्त्रण	उत्पादन बल	मनवीय दबाव	मध्यमान	प्रमाप विचलन
जवाहर नवोदय विद्यालय, पैगाँव	46.94	46.47	45.86	49.08	37.15	40.99	55.12	57.96	46.69	6.92
जवाहर नवोदय विद्यालय, अगसौली (हाथरस)	48.74	67.89	62.43	52.78	57.65	54.27	46.57	35.86	52.90	9.78
हजारीमल सोमनी इण्टर कॉलेज, वृन्दावन (अनुदानित विद्यालय)	59.28	39.25	39.62	35.53	46.45	59.03	41.61	43.12	45.49	9.01
प्रेमदेवी इण्टर कॉलेज, मथुरा (अनुदानित विद्यालय)	58.84	56.39	31.31	39.84	45.35	35.20	31.96	62.73	45.20	12.62

www.ignited.in

विभिन्न विद्यालयों एवं (SOCDQ) परिक्षण के आधार पर उनमें पाया गया संगठनात्म वातावरण पर निम्न पाया गया

क्रम सं.	विद्यालय का नाम	विद्यालय का वातावरण
1.	जवाहर नवोदय विद्यालय पैगाँव, मथुरा	परिचित वातावरण
2.	जवाहर नवोदय विद्यालय अगसौली, हाथरस	स्वायत्त वातावरण
3.	(अनुदानित विद्यालय) हजारीमल सोमानी इण्टर कॉलेज, वृन्दावन	नियन्त्रित वातावरण
4.	(अनुदानित विद्यालय) प्रेमदेवी इण्टर कॉलेज, मथुरा	पैतृक वातावरण

शोध अध्ययन के कल्पनाएँ

अध्ययन विषय के चयन के बाद अनुसन्धान कार्य को आगे बढ़ाने के लिये किसी न किसी आधार की आवश्यकता होती है। यह आधार किसी कल्पना के रूप में होता है ।

1. विद्यालयों की संगठनात्मक वातावरण भिन्नता विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव डालती है।

2. विद्यालयों की संगठनात्मक वातावरण भिन्नता विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों पर प्रभाव डालती है।

शोध अध्ययन कि परिसीमाएं

शोधकर्ता ने प्रस्तुत अध्ययन को निम्नानुसार परिसीमित किया है -

1. प्रस्तुत अध्ययन हेतु उत्तर प्रदेश के केवल पाँच जिलों के जवाहर नवोदय विद्यालय एवं उन्हीं क्षेत्रों के पाँच अनुदानित विद्यालयों को तुलनात्मक अध्ययन हेतु चयन किया है।

2. न्यादर्श में माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों को चुना है।

अध्ययन के चर

प्रस्तावित अध्ययन में चर निम्न प्रकार होंगे-

- स्वतंत्र चर विद्यालय का संगठनात्मक वातावरण
- नियंत्रित चर विद्यालय के प्रकार जवाहर नवोदय विद्यालय एवं अनुदानित विद्यालय

शोध हेतु न्यायदर्श:

उत्तर प्रदेश के लगभग सभी में जिलों जवाहर नवोदय विद्यालय स्थापित हो चुके हैं शोधकर्ता द्वारा सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन करना सम्भव नहीं था इसीलिये उत्तर प्रदेश के मथुरा वह हाथरस जिलों के जवाहर नवोदय विद्यालय एवं मथुरा जिले के दो अनुदानित विद्यालय के विद्यार्थियों को सर्वेक्षण विधि द्वारा 464 विद्यार्थियों (11 एवं 12) न्यादर्श के रूप में चुना गया।

तथ्य संकल्प हेतु प्रयुक्त उपकरण:

प्रस्तुत शोध हेतु शोधकर्ता के द्वारा निम्नलिखित प्रमापीकृत उपकरण प्रयोग में लिये गये हैं।

1. डॉ. एस. डी. कपूर द्वारा निर्मित परिक्षण - 16 पी. एफ. परीक्षण

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुडे एवं हेट: "मेथड् स इन रिसर्च (मेकग्राहिल बु क कम्पनी) 1962, पृ. सं. 56।

2. हरलॉक ई .बी.: "चाइल्ड डेवेलपमेन्ट"

3. लैडेल: "द डिक्शनरी ऑफ़ साइकोलोजीकल टर्म्स ", पृ. सं. 19

4. गै रेट, एच.ई.: "जनरलसाइकोलोजी" पृ. सं. 500

5. अचार्लु , के. ए.: "कन्सेप्ट ऑफ़ द मॉडल स्कूल (नवोदय) गाँधी विज्ञान 1 (2) अक्टूबर 1990, पृ.सं. 7-15

6. धर्मराज, वी विलियम;पूनम बाला त्यागराजन एवं आनन्दन (2000): " द टीचर इफेक्टीवनेस इन टर्म स ऑफ़ आर्गेनाइजेशन क्लाइमेट " न्यू फ्र न्टीयर्स एजूकेशन वोल्यूम 30 (2)

7. जना, आर.,: लाइफइटनवोदय विद्यालय एजूकेशनलरिव्यू 95 (1989) सितम्बर पृ.सं. 147-149

8. पण्डी बी.एन. (1992): "स्टडीहेबिट्स ऑफ़ डिस्एडवाटेड एण्डनोन डिस्एवांटेज्ड एडोलेन्सेस इनरिलेशन टू सेक्स एण्ड एकेडेमिक परफोरमैन्स" इण्डियन जरनल ऑफ़ साइक्रोमेट्री एण्ड एजूकेशन, 23 (2) पृ.सं. 91-96

9. गार्ड नर औ र मर्फी : "एन इन्ट्रोडक्शन टू साइकोलोजी", पृ.सं. 501

www.ignited.in

Ashok Kumar Sharma[1]* Dr. Abhishek Kulshrestha[2]

10. सी. सार्जेन्ट (1967): ''एन एनालिसिस ऑफ़ प्रिन्सीपल एण्ड स्टाफ पर सेप्शन ऑफ़ हाई स्कूल

11. आनन्द एस.पी.,: ''आर्ग नाइजेशन क्लाइमेटइन स्कूल्स'' -जरनल इण्डियन एजूकेशन 18 (4) नवम्बर 1992 पृ.सं. 46-53

Corresponding Author

Ashok Kumar Sharma*

Research Scholar, Singhania University, Churu, Rajasthan

ashok.harsh50@gmail.com